SJIF Impact Factor =
E-ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April - June 2021 Vol 02 Issue VI

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June -2021

Vol.02 Issue V

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services IIFS *2.875*

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF) *ISRA JIF- 1.312*

ISRA JIF

Digital Online Identifier-Database System

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
15	हिंदी की प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' एवं मराठी की स्नेहप्रभा प्रधान की आत्मकथा 'स्नेहांकिता' का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाधव	69
16	राज्य एवं न्याय व्यवस्था का भारतीय चिंतन	अंचल सक्सेना	73
17	मानवाधिकार में पत्रकारिता की भूमिका	प्रा.डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	78
18	सतना जिले में गोवंश आधारित व्यवसाय का विश्लेषणात्मक अध्ययन	मोहम्मद आरिफ डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा	81
19	साहित्यकार का सामाजिक दायित्व	डॉ. रमेश टी. बावनथड़े	86
20	सुशीलकुमार सिंह के नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्या-जातिभेद	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	89
21	हिंदी भाषा के प्रचार में सोशल मीडिया का योगदान	नरेन्द्र सोनी	92
22	रविभाण सम्प्रदाय में गुरु की संकल्पना	डॉ. सुनीता शर्मा	95
23	मानवीकरण एवं नई शिक्षा नीति	डॉ. शीतल प्रसाद महेन्द्रा	102
24	रागदरबारी उपन्यास में मूल्य-विघटन	प्रा.कोलते नितीन विजयकुमार	108
25	बी.एड. पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व	मोनिका चौबे	111
26	राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में चित्रित महानगर	रीता कुमारी देव	115
27	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोक संवेदना	डॉ. अनुपम गुप्ता	119
28	'बदलते रूप' नाटक में चित्रित पारिवारिक विघटन	प्रा. नीता पोपट साठे	124
29	कोविड-19 महामारी – परिवार पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुरैना जिले के अंबाह तहसील के संदर्भ में)	डॉ. रक्षा कम्ठान	126
30	बिहारी के काव्य में ज्योतिष चमत्कार	डॉ. पूर्णिमा अग्रवाल	131
31	डॉ. शंकर शेष के नाटक 'रक्तबीज' में मिथकीय प्रयोग	डॉ. दादासाहेब नारायण डांगे	134
32	वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव	डॉ॰ अर्चना हजारिका	138
33	वैश्विकरण के सन्दर्भ में लोप होते राष्ट्र, राज्य और भारतीय ग्राम	डॉ. मोहसिन रशीद शेख	142
34	"राष्ट्र-प्रेम की अद्भूत धरोधर:आहुति"	श्री.रविंद्र पुंजाराम ठाकरे प्रो.डॉ.अनिता पोपटराव नेरे	148
35	प्रेमचंद के कथा सागर में सूक्तियों के मुक्ता - माणिक्य	डॉ. सुधा त्रिवेदी	151
36	स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका	डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील	157
37	वेदों में मानसिक स्वस्थ्य	डॉ. विनोद श्रीराम जाधव	160

ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

28

'बदलते रूप' नाटक में चित्रित पारिवारिक विघटन

प्रा. नीता पोपट साठे

सहाय्यक प्राध्यापक,

राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कदमवाडी रोड, कोल्हापुर महाराष्ट्र - 416003.

Email – satheneeta7@gmail.com Mobile No. 7387106184

भारतीय संस्कृति में सामाजिक जीवन की प्राथमिक पाठशाला 'परिवार' है, लेकिन पाश्चात्य संस्कृति और आधुनिकता के कारण परिवार की संरचना में बहुत तेजी से परिवर्तन आ रहा है| परिवार के माध्यम से ही मूल्य एवं नियम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संक्रमित होते है | लेकिन जब परिवार का सदस्य ही स्थापित एवं मान्य नियमों का उल्लंघन करता है तो सारा परिवार अव्यवस्थित हो जाता है इसे ही पारिवारिक विघटन कहा जाता है | पारिवारिक झगड़े, पारिवारिक तनाव, व्यभिचार, विवाह-विच्छेद आदि पारिवारिक विघटन के मूल कारण है|

साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' एक ऐसे नाटककार है, जिन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समकालीन सामाजिक बोध से युक्त जीवन की वास्तविकता को कुशलता से पिरोया है| उनके सामाजिक नाटकों की नाट्यानुभुति यथार्थ जीवन की गहराई को उभारती है | सामाजिक नाटकों के द्वारा समाज की विसंगतियों का पर्दाफाश करना और सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से समाज को प्रगतिपथ पर लाना उनके साहित्य का प्रमुख लक्ष्य रहा है| डॉ. चन्द्र के सामाजिक नाटकों का प्रमुख केंद्र परिवार या पारिवारिक जीवन रहा है| उनका 'बदलते रूप' नाट्यसंग्रह पारिवारिक विघटन की समस्या को प्रस्तुत करता है, जो सन 1978 ई. में अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित तीन पूर्णाकार नाटकों का संग्रह है | इसमें तीन लघु पारिवारिक नाटक संगृहीत है,- 'भावना के पीछे', 'शादी का चक्कर' और 'बदलते रूप' | इस नाटकों में महानगरीय आधुनिकता के दुष्प्रभावों के कारण पति-पत्नी के पारस्परिक संबंधों में आए परिवर्तन एवं पारिवारिक विघटन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है | डॉ. परवीन अख्तर के शब्दों में, ''भावना के पीछे, शादी का चक्कर और बदलते रूप तीनों ही परिवारप्रधान सामाजिक नाटक है | तीनों ही नाटकों में पारिवारिक विघटन में सहायक तत्वों को रूपायित किया है| आधुनिक विलासिता पूर्ण एवं भोगवादी संस्कृति के दुष्परिणामों की यथार्थता से जनता को परिचित कराया है|'' [1]

'भावना के पीछे' नाटक की कथावस्तु आधुनिक वैज्ञानिक प्रगतिवादी युग की विकसित नई संस्कृति से निर्मित आधुनिक बोध से संबंधित है| नाटक की केंद्रीय पात्र रेखा पुरुष वर्ग के विरुध्द पूर्वाग्रह से ग्रस्त प्रतिकियावादी नारी है, जिसे पाश्चात्य सभ्यता, नई संस्कृति और सहज परिवेश ने विकृत बनाया है | इसी विकृत वृत्ति के कारण वह अपने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा को भूलकर स्वछन्द जीवन जीनेवाली आधुनिक नारी बन गई है | रेखा अपने ग्रेजुएट पति अखिलेश की बेरोजगारी का पूरा - पूरा फायदा उठाती है | वह अपने पति के साथ घरेलू नौकर जैसा व्यवहार कराती है | चाय बनाने से लेकर कपडों पर इस्तरी करने तक सारे काम वह अखिलेश से करवाती है, ऊपर से कुछ गलती होने पर अपने प्रेमी उमेश के सामने उसे अपमानित करती है | अखिलेश की यह हास्यास्पद स्थिति पाठकों के लिए मनोरंजन बन जाती है, पर उसकी विवशता का चित्रण लेखक ने इतने प्रभावी ढंग से किया है कि, वह हँसी का पात्र दया का पात्र बन जाता है | नाटक की दूसरी पात्र उर्मिला रेखा की सहेली है, लेकिन वह अपने विचारों और व्यवहार से रेखा से सर्वथा भिन्न है | उर्मिला के समझदार रूप के द्वारा चन्द्र जी ने रेखा के स्वेच्छाचारिता का खंडन करके एक आदर्श भारतीय नारी का रूप चित्रित किया है| रेखा अपनी स्वछंदता के तहत अखिलेश जैसे सदाचारी युवक को छोड़कर अपने प्रेमी उमेश की पत्नी बन जाती है | प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने रेखा के माध्यम से आधुनिक या स्वेच्छाचारिता बनी नारी का भीतरी खोखलापन उजागर किया है | रेखा के आत्महत्या कर लेने पर महेश के द्वारा कही गयी बात इस तथ्य की पुष्टि करती है, ''उसकी स्वतंत्रता उसे खा गयी| भावुकता और आवेश ने उसके विवेक को नष्ट कर दिया | जितनी स्वतंत्रता उसे मिली थी, उतनी एक नारी के लिए उचित नहीं थी |'' [2]

'शादी का चक्कर', 'रंगीन चश्मा' एकांकी का परिवर्तित रूप है, 1963 में डॉ. चन्द्र ने कहीं एक गैग की चर्चा सुनी थी जो वैवाहिक विज्ञापन का उपयोग व्यवसाय के रूप में कर रहा था इस गैग में कुछ लडकियाँ भी थी, जिनके वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराए जाते थे और लडकियों की शादी में या तो पर्याप्त पैसा लिया जाता था या फिर लडकियाँ ही जिस परिवार में शादी

ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

करके जाती थी, वहाँ से जेवर और पैसे लेकर गायब हो जाती थी, यही घटना 'शादी का चक्कर' नाटक के मूल में है। नाटक का प्रमुख पात्र रतन एक आँख का काना, कुरूप है, जो चालीस पार कर चुका है, लेकिन अविवाहित होने के कारण एकाकी जीवन जी रहा है। उसका मित्र राजीव वैवाहिक विज्ञापन की सहायता से उसकी शादी मोहिनी से पक्की कराता है। मोहिनी को देखने के लिए जाते वक्त राजीव रतन को सूट-बूट-टाई और उसके कानेपन को छिपाने के लिए रंगीन चश्मा पहना कर ले जाता है। इस तरह शादी के लिए लालायित रतन का स्वांग नाटक में हास्य की सृष्टि करता है। मोहिनी का यह पाँचवा विवाह होता है। वह वैवाहिक विज्ञापन का उपयोग व्यवसाय के रूप में करके धन लूटनेवाले गैंग से जुडी होती है। वह पिछले विवाहों में भी मोटी रकम हासिल करके अपने परिणय-सूत्रों को तोड़ चुकी है। उसकी उम्र भी चालीस के आस-पास है, जिसे मेक-अप से छुपाया गया है। रतन की तरह मोहिनी ने भी अपने कानेपन को छुपाने के लिए रंगीन चश्मा पहना है। मनोहर जो दूर के रिश्ते में मोहिनी के भाई के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता है रतन से मोहिनी का कर्ज पटाने के बहाने पांच हजार रुपये की मांग करता है। शादी के मोह में जकड़ा हुआ रतन खुद के मकान को गिरवी रखकर रकम अदा करता है। लेकिन शादी के बाद रतन और भी अशांत हो जाता है। रतन की यह स्थिति इस बात से स्पष्ट होती है, '' मैं मोहिनी से बहुत परेशान हो गया हूँ, राजीव ! सब तरह के प्रयत्न करके देख लिया, पर वह किसी भी तरह अपनी प्रकृति बदलने को तैयार नहीं है।'' [3] मोहिनी घर का कोई काम नहीं करना चाहती, यहाँ तक की भोजन भी नहीं पकाती है। मजबूर होकर रतन को होटल से खाना मँगवाना पड़ता है। अंत में राजीव द्वारा रतन को मोहिनी की सारी सच्चाई पता चलती है। यह बात मोहिनी को पता चलते ही वह घर छोड़कर भाग जाती है। उसके चले जाने पर रतन राहत की सांस लेता है। इस तरह यह हास्य नाटक शादी के नाम से समाज को लूटनेवाले गिरोह से सचेत करने का प्रयास किया है।

'बदलते रूप' इस संकलन का तिसरा नाटक है। जिसमें संध्या– प्रदीप, रीता - मनोज और आरती - प्रमोद इस तीन दम्पत्तियों के पारिवारिक जीवन को प्रस्तुत किया है। आधुनिकता से ग्रस्त संध्या को लोक– मर्यादा की सभी हदे लांघ कर अपने मित्र रवीन्द्र के साथ स्वच्छंद विहार करती है। पत्नी के इस कटु व्यवहार के प्रतिक्रिया स्वरुप पति प्रदीप भी स्वेच्छाचारी हो जाता है और शराब पीने लगता है। दूसरे दम्पत्ति रीता और मनोज का दाम्पत्य जीवन भी कलहपूर्ण है। रीता स्वभाव से शान्त, सहिष्णु और मर्यादित है, किन्तु पति मनोज रीता के गहने बेच कर शराब पीता है और उसे शारीरिक रूप से भी प्रताड़ित करता है। मनोज के इस अमानवीय व्यवहार से रीता भी धीरे-धीरे असहिष्णु हो जाती है और उसमें स्वेछाचारिता आ जाती है। तीसरे दम्पत्ति आरती और प्रमोद का दाम्पत्ति जीवन सुखी, संतुलित और मर्यादित है। आरती संध्या की सहेली है। वह संध्या और रीता के पारिवारिक विघटन के लिए परिवार में स्त्री के और दूसरे में पुरुष के अतिवादी व्यवहार को जिम्मेदार मानती है। आरती के विचारों से परिचित होकर प्रमोद कहता है, "बड़ा आश्चर्य है आरती ! एक और पत्नी के दुर्व्यवहार से पति बिगड़ रहा है, और दूसरी ओर पति के दुर्व्यवहार से पत्नी।" [4] अंत में प्रमोद आरती के उदात्त विचारों से प्रभावित होकर दोनों दम्पत्ति उचित मार्ग पर आकर व्यवस्थित जीवन जीने के लिए तैयार होते है। वस्तुतः परिवार में सुख, शांति, प्रेम, आदर सम्मान होना अनिवार्य है तभी वह परिवार परिवार कहलाया जाता है। नाटककार ने यही बात प्रस्तुत नाटक में की है। डॉ. लवकुमार लवलीन के शब्दों में "नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से साबित कर दिया है की परिवार में सुख शान्ति बनाए रखने के लिए पति पत्नी में भावात्मक समन्वय, विचारों में एकरूपता और दायित्व बोध होना अति आवश्यक है।" [5] आरती और प्रमोद के सुखी दांपत्य जीवन का यही रहस्य है। इस प्रकार नाटककार ने आरती और प्रमोद के दांपत्य जीवन के माध्यम से एक आदर्श परिवार की संकल्पना को प्रतुत किया है। साथ ही पारिवारिक विघटन का एक कारण आधुनिक शिक्षित पत्नी का स्वच्छंद विहार तथा दूसरा कारण पति की स्वेछाचारिता और नशे की आदत है, यह भी प्रमुखता से दिखाया है।

प्रस्तुत कृति के तीनों नाटकों में वैवाहिक प्रसंगों, पति-पत्नी के स्वतंत्र और स्वेछाचारी विचार पारिवारिक विघटन में किस प्रकार से सहाय्यक सिद्ध होते है, इससे पाठकों को परिचित कराया है। पति-पत्नी के असामाजिक व्यवहारों का मूल कारण पश्चिमी परिवार - व्यवस्था को अपनाने की मानसिकता, भौतिकवादी शिक्षा तथा कर्तव्य - विमुखता को दिखाया गया है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ. परवीन अख्तर ,समकालीन हिंदी नाट्य पतिदृश्य, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2007 ई., पृ.क्र. 97
2. डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र , बदलते रूप, अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1978, पृष्ठ क्र. 32''
3. वही, पृष्ठ क्र. 70
4. वही पृष्ठ क्र. 100
5. डॉ. लवकुमार लवलीन, डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र की रंगयात्रा, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, 2012, पृष्ठ क्र. 120